दान - बल

रामधारी सिंह

I दीर्घउत्तरीय प्रश्न :

1. दान मे अहम कब और क्यो आ जाता है?

Ans: जब मनुष्य अपने द्वारा दी गई चीजो को दान ना मानकर दूसरों पर अहसान करना मान लेता है तब उसमे अहम अर्थात अहंकार आ जाता है। वह बिना किसी लाभ के दूसरो की मदद नही करता।

2. कवि ने दान को 'जीवन का झरना' ~~कहा है / क्यो कि~~ कैसे सिद्ध किया है?

Ans: कवि ने दान को 'जिवन का झरना' कहा है क्योकि जिस प्रकार झरने को बहने से कोई नही रोक सकता। उसी प्रकार दान से हम स्वयं को रोक नही सकते, यह जिवन भर चलने वाली प्रक्रिया है।

3. दान को जीवन का प्रकृत धर्म क्यो कहा जाता है?

Ans: प्रकृति की सभी चीज़े अपना सर्वस्व दूसरो पर न्योछावर करती है, जैसे पेड़, नदी आदि। कवि ने प्रकृति से प्रेरणा लेते हुए ही दान को भी प्रकृत धर्म माना है। लाभ की इच्छा किए बिना हमे लगातार दान करना चाहिए।

II 4. भाव स्पष्ट कीजिए :)

क) एक रोज़ तो हमे स्वयं सब कुछ देना पड़ता है।

Ans इस पंक्ति के माध्यम से कवि यह कहना चाहता है कि यदि एक व्यक्ति अपने जीवन मे कुछ दान नही करता है तो भी व्यक्ति के मरने के बाद अपना सब कुछ मिट्टी मे मिलाना ही पड़ता है, यह प्रकृति का नियम है।

ख वे डालियाँ स्वस्थ और फिर नए-नए फूल आएँ।

Ans कवि हमको यह समझाना चाहते हैं कि परिवर्तन या बदलाव प्रकृति का नियम है। नया एक दिन पुराना अवश्य होता है। नए को मजबूत बनाने के लिए पुराने को भी सँभालकर रखना पड़ता है। डालियों के स्वस्थ रहने पर ही उसमें नए-नए फल आएँगे।

5) कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दो मे लिखिए।

Ans इस कविता में कवि ने दान का महत्तव बताया है। प्रकृति का कार्य - व्यापार दान -बल पर चलता है। यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। दान- में अपना भी हित निहित होता है। प्रकृति से संबंधित कई चीजो के उदाहरण हम ले सकते है जैसे -

पेड़, बादल, नदी आदि प्रकृति से सीख लेते हुए मनुष्य को भी दान देने का पुण्य कार्य करना चाहिए।

— x —